



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

जीवन में बढ़ोतरी के लिए अपने काम को कैसे मजबूत करें

राजा दाऊद (भाग 6) — मजबूती और बढ़ोतरी

रविवार उपदेश, 11 अक्टूबर 2026

अब हम दाऊद के जीवन के उस चरण को देख रहे हैं, जब उसे पूरे इस्राएल का राजा नियुक्त किया जा चुका था। इस चरण से हम स्थिरीकरण और विस्तार के विषय में सीखते हैं।

जब परमेश्वर हमारे जीवन में सामर्थ्यपूर्वक कार्य करता है, तो हमें उन बातों को स्थिर करना चाहिए जिन्हें वह हमारे भीतर, हमारे लिए और हमारे द्वारा करता है। यहाँ स्थिरीकरण का अर्थ है कि हम उस बात को अपने जीवन का हिस्सा बना लें, ताकि उसमें बने रहें और वहीं से आगे निर्माण करें। हम नहीं चाहते कि परमेश्वर द्वारा किया गया अच्छा कार्य व्यर्थ हो जाए और केवल हमारी स्मृति का हिस्सा बनकर रह जाए—ऐसी घटना के रूप में जो कभी हुई थी, पर अब हमारे जीवन पर उसका कोई प्रभाव न हो।

परमेश्वर जो भी सामर्थ्यपूर्ण कार्य करता है, जो भी आशीष उंडेलता है, हर अनुभव, हर प्रकाशना और हर अंतर्दृष्टि, उसे परमेश्वर में हमारी आगे की यात्रा का एक और निर्माण-खंड बनना चाहिए और हमें परमेश्वर में और ऊँचे स्तरों तक ले जाना चाहिए।

स्थिरीकरण और विस्तार

2 शमूएल अध्याय 5-10; 1 इतिहास अध्याय 10-19

हम राजा दाऊद के जीवन के इस चरण में हुई घटनाओं का संक्षिप्त सार प्रस्तुत करते हैं। इसके बाद हम स्थिरीकरण और विस्तार के विषय में मुख्य शिक्षाएँ लेते हैं—अर्थात् परमेश्वर हमारे जीवन में जो कुछ लाता है, उसे हम कैसे आत्मसात करें और उसके आधार पर आगे निर्माण करें।

यरूशलेम पर अधिकार करना

जब पूरा इस्राएल दाऊद के पास आकर उसे राजा के रूप में स्वीकार करता है, तब दाऊद यरूशलेम पर विजय प्राप्त करता है और उसे इस्राएल की राजनीतिक तथा धार्मिक राजधानी बनाता है (2 शमूएल 5:6-10)।

यरूशलेम को राजधानी बनाकर दाऊद इस्राएल के राज्य को स्थापित करता है, उसका विस्तार करता है और उसे सुरक्षित करता है (2 शमूएल 5-6)। दाऊद की सेना बलवान और सामर्थी थी (1 इतिहास 11-12)।



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

इसके बाद दाऊद वाचा के सन्दूक को यरूशलेम में लाता है (2 शमूएल 6; 1 इतिहास 13, 15-16)।

परमेश्वर दाऊदी वाचा स्थापित करता है और घोषणा करता है कि दाऊद का सिंहासन सदा बना रहेगा (2 शमूएल 7; 1 इतिहास 17)।

दाऊद परमेश्वर के लिए एक मन्दिर, अर्थात् परमेश्वर का भवन बनाने की इच्छा व्यक्त करता है (2 शमूएल 7)।

दाऊद **पलिशतियों, मोआबियों, अरामियों (सीरियाई लोगों), एदोमियों और अम्मोनियों** पर विजय प्राप्त करता है (2 शमूएल 8-10; 1 इतिहास 18-19)। उसका राज्य उत्तर और उत्तर-पूर्व में फरात नदी के क्षेत्र से लेकर दक्षिण में मिस्र की सीमाओं और लाल सागर के क्षेत्र तक फैला था। उसका प्रभाव पश्चिम में भूमध्यसागरीय तट तक और पूर्व में यरदन के पार के क्षेत्रों तथा सीरिया के कुछ भागों तक था। उसने मेसोपोटामिया की महान नदी फरात की ओर फैले क्षेत्रों पर सैन्य प्रभुत्व स्थापित किया।

दाऊद ने इस्राएल के पुराने पश्चिमी शत्रुओं, पलिशतियों को पराजित किया। वे भूमध्यसागरीय तटीय मैदान में गाज़ा, अश्कलोन, अश्दोद, एक्रोन और गत के क्षेत्रों में रहते थे। दाऊद ने मोआब और अम्मोन को भी पराजित किया। ये प्रदेश मृत सागर और यरदन नदी के पूर्व में स्थित थे और आज मुख्यतः जॉर्डन में आते हैं। दाऊद ने दक्षिण में एदोमियों को हराया और दक्षिण-पश्चिम की ओर मिस्र के निकटवर्ती व्यापक क्षेत्र तक अपना प्रभाव बढ़ाया।

इस बात में अंतर करना महत्वपूर्ण है कि कौन-से क्षेत्र इस्राएल द्वारा सीधे प्रशासित थे और कौन-से क्षेत्र सैन्य कब्ज़े, छावनियों, कर या राजनीतिक अधीनता के कारण दाऊद के अधीन थे। बाइबल के विवरण बताते हैं कि कई पड़ोसी जातियाँ दाऊद की सेवक बन गईं या उसे कर देने लगीं; इसका यह अर्थ आवश्यक नहीं कि उनकी सारी भूमि इस्राएल में सीधे सम्मिलित कर ली गई थी। दाऊद के शासन में यह इस्राएल की क्षेत्रीय शक्ति का सर्वोच्च समय था। इससे सुलैमान के शासनकाल में समृद्धि और मन्दिर निर्माण के युग का मार्ग तैयार हुआ।

दाऊद ने अधिकारियों को नियुक्त किया और सुदृढ़ प्रशासन तथा शासन का उदाहरण प्रस्तुत किया (2 शमूएल 8; 1 इतिहास 18)।

दाऊद ने योनातन के पुत्र मपीबोशेत पर दया दिखाई (2 शमूएल 9)।

राजा दाऊद के जीवन के इस चरण से स्थिरीकरण और विस्तार के विषय में हम कुछ मुख्य शिक्षाएँ प्राप्त करते हैं।

प्रभु को घर बनाने दें

2 शमूएल 5:10



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

इस प्रकार दाऊद बढ़ता ही गया और महान होता गया, और सेनाओं का यहोवा परमेश्वर उसके साथ था।

2 शमूएल 5:12

दाऊद जान गया कि यहोवा ने उसे इस्राएल का राजा होने के लिए स्थिर किया है और अपनी प्रजा इस्राएल के कारण उसके राज्य को ऊँचा किया है।

1 इतिहास 14:17

तब दाऊद की कीर्ति सब देशों में फैल गई, और यहोवा ने सब जातियों के मन में उसका भय डाल दिया।

ये वचन दिखाते हैं कि दाऊद समझता था कि उसके जीवन में और उसकी प्रजा के लिए जो कुछ हो रहा था, वह परमेश्वर का कार्य था। परमेश्वर ने यह सब किया था और अपनी प्रजा के लिए ऐसा कर रहा था।

यह दाऊद का अपना किया हुआ कार्य नहीं था। यह दाऊद के निजी लाभ के लिए नहीं था। यह वह कार्य था जिसे परमेश्वर अपनी प्रजा के लिए कर रहा था, यद्यपि जो कुछ हो रहा था उसके “केंद्र” में दाऊद था।

हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं और हमें अपनी भूमिका निभानी है, फिर भी हमें पहचानना चाहिए कि सब कुछ उसी की ओर से, उसी के लिए और उसी के कारण है।

राजा दाऊद के पुत्र सुलैमान ने भजन संहिता 127:1 में इसे इन शब्दों में व्यक्त किया: “यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ है...”

हमारे जीवन में परमेश्वर जो कार्य कर रहा है, उसे स्थिर करने और उसमें विस्तार करने की एक मुख्य कुंजी यह है कि हम केवल उसी की इच्छा करें जो उससे आता है, और अपनी रुचियों तथा योजनाओं के पीछे चलने के बजाय उसे घर बनाने दें।

सुनते रहें और आज्ञा मानते रहें

यद्यपि दाऊद राजा के रूप में स्थापित हो चुका था, फिर भी वह परमेश्वर से पूछता रहा, उसकी सुनता रहा और मार्गदर्शन के लिए उस पर निर्भर रहा—यहाँ तक कि अपने सैन्य अभियानों में भी। हमारे लिए ऐसे कुछ उदाहरण दर्ज हैं, फिर भी हम विश्वास कर सकते हैं कि दाऊद के सभी महत्वपूर्ण अभियानों में उसका यही दृष्टिकोण रहा होगा।

2 शमूएल 5:19-20



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

19 दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं पलिशतियों पर चढ़ाई करूँ? क्या तू उन्हें मेरे हाथ में कर देगा?” यहोवा ने दाऊद से कहा, “चढ़ाई कर, क्योंकि मैं निश्चय ही पलिशतियों को तेरे हाथ में कर दूँगा।”

20 तब दाऊद बालपरासीम को गया और वहाँ उन्हें पराजित किया। उसने कहा, “यहोवा ने मेरे शत्रुओं को मेरे सामने ऐसे तोड़ दिया है जैसे पानी का बाँध टूट जाता है।” इसलिए उस स्थान का नाम बालपरासीम रखा गया।

2 शमूएल 5:23-25

23 तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, और उसने कहा, “उन पर सीधे चढ़ाई न कर; घूमकर उनके पीछे से आ और शहतूत के वृक्षों के सामने से उन पर आक्रमण कर।

24 जब शहतूत के वृक्षों की चोटियों में चलने की आहट सुनाई दे, तब शीघ्र आगे बढ़ना, क्योंकि तब यहोवा पलिशतियों की सेना को मारने के लिए तेरे आगे-आगे निकलेगा।”

25 यहोवा की आज्ञा के अनुसार दाऊद ने वैसा ही किया और गेबा से लेकर गेजेर तक पलिशतियों को मार भगाया।

परमेश्वर ने दाऊद को दो भविष्यद्वक्ताओं—नातान और गाद—का भी आशीष दिया, जिन्होंने उसके जीवन में परमेश्वर का वचन बोला (2 शमूएल 7:1-17; 2 शमूएल 24)। दाऊद ने इन भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से दिए गए प्रभु के वचन को सुना और उसका पालन किया।

हमारे जीवन में परमेश्वर जो कार्य कर रहा है, उसे स्थिर करने और उसमें विस्तार करने की एक मुख्य कुंजी है कि हम उसकी सुनते रहें और उसकी आज्ञा मानते रहें।

प्रभु के प्रति अपने प्रेम को प्राथमिकता दें — निरंतर आराधना स्थापित करें

2 शमूएल 6; 1 इतिहास 15-16 और 1 इतिहास 23-26

2 शमूएल 6:14-15, 20-22

14 दाऊद यहोवा के सामने पूरे बल से नाच रहा था, और उसने मलमल का एपोद पहना हुआ था।

15 इस प्रकार दाऊद और इस्राएल का समस्त घराना जयजयकार करते और नरसिंगा बजाते हुए यहोवा का सन्दूक ले आए।



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

20 जब दाऊद अपने घराने को आशीष देने लौटा, तब शाऊल की बेटी मीकल उससे मिलने निकली और कहने लगी, “आज इस्राएल का राजा कितना महिमामय दिखाई दे रहा था! उसने अपने दासों की दासियों के सामने अपने आपको ऐसे उधाड़ा, जैसे कोई नीच मनुष्य निर्लज्ज होकर अपने आपको उधाड़ता है!”

21 दाऊद ने मीकल से कहा, “यह यहोवा के सामने था, जिसने तेरे पिता और उसके समस्त घराने के स्थान पर मुझे चुनकर यहोवा की प्रजा इस्राएल का प्रधान नियुक्त किया। इसलिए मैं यहोवा के सामने आनन्द मनाऊंगा।

22 मैं इससे भी अधिक तुच्छ दिखाई देने को तैयार हूँ और अपनी दृष्टि में नम्र बनूँगा। जिन दासियों की तूने बात की है, उन्हीं के द्वारा मेरा आदर होगा।”

दाऊद परमेश्वर का उत्साही आराधक था। वह लोगों के सामने खुले रूप में परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम प्रकट करने से नहीं हिचकिचाता था। उसका प्रेम परमेश्वर के लिए शुद्ध, सच्चा और निष्कपट था, और उसका हृदय परमेश्वर की आराधना से भरा था। वह अपनी प्रतिष्ठा के विषय में भयभीत नहीं था। वह जानता था कि परमेश्वर उसकी प्रतिष्ठा की देखभाल करेगा।

दाऊद ने इस्राएल में परमेश्वर की निरंतर आराधना स्थापित करने का कार्य आगे बढ़ाया।

1 इतिहास 16:37-40

37 तब उसने आसाप और उसके भाइयों को यहोवा की वाचा के सन्दूक के सामने वहीं छोड़ दिया, कि वे प्रतिदिन की आवश्यकता के अनुसार नियमित रूप से सन्दूक के सामने सेवा करें।

38 ओबेदेदोम और उसके अड़सठ भाइयों को, जिनमें यदूतून का पुत्र ओबेदेदोम और होसा भी थे, द्वारपाल नियुक्त किया।

39 और सादोक याजक तथा उसके याजक भाइयों को गिबोन के ऊँचे स्थान पर यहोवा के निवास के सामने नियुक्त किया।

40 वे यहोवा की वेदी पर नियमित रूप से, अर्थात् सुबह और शाम, होमबलि चढ़ाएँ और यहोवा की व्यवस्था में लिखी हुई सभी बातों के अनुसार करें, जिसकी आज्ञा उसने इस्राएल को दी थी।

दाऊद वाचा के सन्दूक को यरूशलेम लाया और वहाँ प्रभु के सामने आराधना स्थापित की। 1 इतिहास 23-26 का विवरण याजकों, लेवियों, संगीतकारों, द्वारपालों और उनके निर्धारित कार्यों के विषय में बहुत अधिक जानकारी देता है।



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

दाऊद ने आराधना के दो समन्वित केंद्र स्थापित किए, क्योंकि वाचा का सन्दूक और मूसा का निवास-स्थान उस समय अलग-अलग स्थानों पर थे।

यरूशलेम — सियोन पर्वत: सन्दूक को उस तम्बू में रखा गया जिसे दाऊद ने तैयार किया था। आसाप और उसके साथी लेवी स्तुति, धन्यवाद और संगीत के द्वारा सन्दूक के सामने सेवा करते थे।

गिबोन: सादोक और याजक मूसा के निवास-स्थान में निर्धारित बलिदानों की आराधना जारी रखते थे और सुबह-शाम होमबलि चढ़ाते थे।

लेवी:

प्रभु के भवन के कार्य के लिए नियुक्त लेवी: 24,000

अधिकारी और न्यायी: 6,000

द्वारपाल: 4,000। द्वारपाल प्रवेश-द्वारों और सुविधाओं की रक्षा करते थे। उनके परिवारों और दलों के अनुसार उन्हें कार्य सौंपे जाते थे।

वाद्ययंत्रों के साथ प्रभु की स्तुति करनेवाले संगीतकार: 4,000। लेवियों को हर सुबह और शाम, सब्त के दिनों, नए चाँद के अवसरों और निर्धारित पर्वों पर प्रभु का धन्यवाद और स्तुति करने के लिए नियुक्त किया गया था।

कुल: 38,000

याजक:

दाऊद ने 1 इतिहास 24:1-19 के अनुसार याजक-पद को 24 दलों में व्यवस्थित किया। प्रत्येक दल की सेवा की बारी चिट्ठी डालकर निर्धारित की गई। इससे याजकों की सेवकाई व्यवस्थित क्रम में चल सकी; सभी याजकों को एक ही समय सेवा करने की आवश्यकता नहीं थी।

आराधना के प्रमुख अंगुवे

संगीत से जुड़े तीन प्रमुख परिवारों को भविष्यद्वाणी से युक्त गीत और वाद्ययंत्रों द्वारा **आराधना की जिम्मेदारी सौंपी गई।**



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

आसाप यरूशलेम में सन्दूक के सामने सेवा करनेवाले संगीतकारों का अगुवा था। उसकी सेवकाई में धन्यवाद, स्तुति और झाँझ शामिल थे (1 इतिहास 16:4-7; 25:1-2)।

हेमान आराधना के लिए नियुक्त प्रमुख अगुवों में से एक था। उसका परिवार संगीतकारों के संगठित दलों में शामिल था (1 इतिहास 16:41-42; 25:4-5)।

यदूतून एक अन्य संगीतकार परिवार का अगुवा था, जो वाद्ययंत्रों और धन्यवाद के साथ सेवा करता था। उसके वंशजों को द्वारपालों के कार्य भी सौंपे गए थे (1 इतिहास 16:41-42; 25:3, 6)।

1 इतिहास 25:7-8 में **288 प्रशिक्षित और कुशल संगीतकारों का उल्लेख** है। उन्हें 12-12 संगीतकारों के 24 दलों में व्यवस्थित किया गया था और उनकी सेवा की जिम्मेदारियाँ चिट्ठी डालकर निर्धारित की जाती थीं। प्रत्येक दल निर्धारित संगीत-अगुवों की देखरेख में सेवा करता था।

दाऊद ने विस्तृत संगठन, योजना, साझा जिम्मेदारी, प्रशिक्षित नेतृत्व और व्यवस्थित बारी के माध्यम से निरंतर आत्मिक आराधना स्थापित की, ताकि परमेश्वर की आराधना लगातार चलती रहे।

हमारे जीवन में परमेश्वर जो कार्य कर रहा है, उसे स्थिर करने और उसमें विस्तार करने की एक मुख्य कुंजी है कि हम परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम, निरंतर आराधना और उसके साथ संगति को प्राथमिकता दें। इसे व्यवस्थित करें और अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएँ, ताकि यह परमेश्वर के लिए प्रेम और आराधना की निरंतर धारा बन जाए।

परमेश्वर की वाचा के अधीन चलें

दाऊद के जीवन के इस चरण में यह देखना सुन्दर है कि परमेश्वर स्वयं दाऊद के साथ एक वाचा स्थापित करता है। इसे प्रायः “दाऊदी वाचा” कहा जाता है। दाऊद ने इस वाचा को ग्रहण किया और इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद किया।

2 शमूएल 7:16, 27-29

16 तेरा घराना और तेरा राज्य तेरे सामने सदा बना रहेगा; तेरा सिंहासन सदा स्थिर रहेगा।

27 क्योंकि हे सेनाओं के यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, तूने अपने दास पर यह प्रकट किया है, “मैं तेरे लिए घराना बनाऊँगा।” इसलिए तेरे दास को तुझसे यह प्रार्थना करने का साहस मिला है।

28 और अब, हे प्रभु यहोवा, तू ही परमेश्वर है और तेरे वचन सत्य हैं। तूने अपने दास से यह भलाई करने की प्रतिज्ञा की है।



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

29 अब कृपा करके अपने दास के घराने को आशीष दे, कि वह तेरे सामने सदा बना रहे; क्योंकि हे प्रभु यहोवा, तूने ही यह कहा है, और तेरी आशीष से तेरे दास का घराना सदा आशीषित रहे।

कल्पना कीजिए कि इस समय से दाऊद का दृष्टिकोण कितना बदल गया होगा। वह वाचा की सामर्थ्य को समझ गया था। परमेश्वर ने उसे आश्वासन दिया था कि उसका सिंहासन सदा बना रहेगा।

हम जानते हैं कि यह यीशु मसीह में पूरा होगा (यशायाह 9:6-7; लूका 1:32)।

परमेश्वर हमारे जीवन में जो कार्य कर रहा है, उसे स्थिर करने और उसमें विस्तार करने की एक मुख्य कुंजी है कि हम वाचा के लोग बनकर चलें, उसकी वाचा को जानें, उसमें विश्राम करें और इस बात में पूरी तरह आश्वस्त रहें कि उसके वचन सत्य हैं।

बड़ी विजय मिलकर कार्य करने से प्राप्त होती है

दाऊद के शासन के इस चरण की एक और विशेषता वे पुरुष थे जो उसके साथ काम कर रहे थे। इन अद्भुत लोगों की सहायता से दाऊद अपने राज्य की सीमाओं को आगे बढ़ाने और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हुआ।

2 शमूएल 7; 2 शमूएल 10

ये वे लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने दाऊद के जंगल में बिताए वर्षों के दौरान एकत्र किया था—वे लोग जिन्हें आत्मा ने प्रेरित करके लाया था, वीर योद्धा और समझ-बूझ रखनेवाले लोग।

1 इतिहास 12 का यह अंश पीछे मुड़कर बताता है कि ये लोग दाऊद के पास तब आए थे, जब वह अदुल्लाम की गुफा में था और जंगल में अपने वर्ष बिता रहा था।

1 इतिहास 12:16-18, 22, 32-33

16 बिन्यामीन और यहूदा के कुछ लोग भी गढ़ में दाऊद के पास आए।

17 दाऊद उनसे मिलने बाहर गया और उनसे कहा, “यदि तुम शान्ति से मेरी सहायता करने आए हो, तो मेरा हृदय तुम्हारे साथ एक हो जाएगा; परन्तु यदि तुम मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ में पकड़वाने आए हो, जबकि मेरे हाथों में कोई अन्याय नहीं है, तो हमारे पूर्वजों का परमेश्वर देखे और न्याय करे।”



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

18 तब सेनापतियों के प्रमुख अमासै पर आत्मा उतरा और उसने कहा, “हे दाऊद, हम तेरे हैं; हे यिशै के पुत्र, हम तेरे पक्ष में हैं! तुझे शान्ति हो, तेरे सहायकों को शान्ति हो, क्योंकि तेरा परमेश्वर तेरी सहायता करता है।” तब दाऊद ने उन्हें स्वीकार किया और सेना के दिलों का अधिकारी बनाया।

22 उस समय प्रतिदिन लोग दाऊद की सहायता के लिए उसके पास आते रहे, जब तक कि उसकी सेना परमेश्वर की सेना के समान बड़ी न हो गई।

32 इस्राएल के वंशजों में से ऐसे लोग थे जो समय को समझते थे और जानते थे कि इस्राएल को क्या करना चाहिए। उनके प्रमुख दो सौ थे और उनके सभी भाई उनके अधीन थे।

33 जबलून में से पचास हजार युद्ध के लिए निकलनेवाले थे। वे युद्ध के सब प्रकार के हथियारों के प्रयोग में निपुण, युद्ध-कुशल और दृढ़हृदय पुरुष थे, जो पंक्तिबद्ध रह सकते थे।

ये लोग आत्मा की प्रेरणा से आए थे। इन लोगों को एकत्र करने में परमेश्वर की दिव्य योजना कार्य कर रही थी।

ये पुरुष शक्तिशाली योद्धा, प्रमुख रणनीतिकार और युद्ध-कुशल विशेषज्ञ थे। वे दाऊद के प्रति निष्ठा में एकचित्त थे। “दृढ़हृदय” होने का अर्थ था कि उनका मन दो भागों में बँटा हुआ नहीं था; उनका उद्देश्य एक था, उनका हृदय अविभाजित था और वे दाऊद के प्रति अटल रूप से निष्ठावान थे।

परमेश्वर हमारे जीवन में जो कार्य कर रहा है, उसे स्थिर करने और उसमें विस्तार करने की एक मुख्य कुंजी है कि हम ऐसे लोगों की अच्छी टीम बनाएँ जो रणनीतिकार और विशेषज्ञ हों तथा परमेश्वर द्वारा दिए गए बुलावे और दर्शन के प्रति पूरी तरह समर्पित हों।

सुदृढ़ संगठन और प्रशासन स्थापित करें

हम पहले ही देख चुके हैं कि दाऊद ने यरूशलेम में दाऊद के निवास-स्थान में प्रभु की निरंतर आराधना स्थापित करने के लिए कितनी अच्छी तरह संगठन किया था।

2 शमूएल 8:15-18

15 दाऊद पूरे इस्राएल पर राज्य करता था और अपनी सारी प्रजा के साथ न्याय और धर्म के अनुसार व्यवहार करता था।

16 सरूयाह का पुत्र योआब सेना का प्रधान था; अहीलूद का पुत्र यहोशापात इतिहास लिखनेवाला, अर्थात् अभिलेखों का प्रभारी था।



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

17 अहीतूब का पुत्र सादोक और एब्द्यातार का पुत्र अहीमेलेक याजक थे; सरायाह राजकीय लेखक था।

18 यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतीयों और पलेतीयों, अर्थात् अंगरक्षकों का प्रधान था; और दाऊद के पुत्र प्रमुख अधिकारी थे।

दाऊद ने सुदृढ़ प्रशासन और संगठन स्थापित किया था, ताकि वह न्याय कर सके और अपनी समस्त प्रजा पर अच्छी तरह शासन कर सके।

अपने जीवन में परमेश्वर ने जो कुछ दिया है, उसे स्थिर करने के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन को व्यवस्थित करें। उसका प्रबन्ध करें, उसे सँभालें और उसके अच्छे भण्डारी बनें।

परमेश्वर हमारे जीवन में जो कार्य कर रहा है, उसे स्थिर करने और उसमें विस्तार करने की एक मुख्य कुंजी है कि व्यक्तिगत स्तर पर और परमेश्वर ने जो कुछ हमें सौंपा है, उसमें सुदृढ़ संगठन स्थापित करें।

दयालुता दिखाएँ

अंत में, हमें दाऊद के हृदय की पवित्रता और दयालुता की झलक मिलती है। वह पूछता है और खोजता है कि क्या शाऊल और योनातन के परिवार में कोई ऐसा है जिस पर वह दया कर सके।

2 शमूएल 9:1

दाऊद ने पूछा, “क्या शाऊल के घराने में अभी कोई बचा है, जिस पर मैं योनातन के कारण दया करूँ?”

6 जब शाऊल के पुत्र योनातन का पुत्र मपीबोशेत दाऊद के पास आया, तो वह मुँह के बल गिरकर दण्डवत् करने लगा। दाऊद ने कहा, “मपीबोशेत?” उसने उत्तर दिया, “तेरा दास उपस्थित है।”

7 दाऊद ने उससे कहा, “मत डर, क्योंकि मैं तेरे पिता योनातन के कारण निश्चय ही तुझ पर दया करूँगा। मैं तेरे दादा शाऊल की सारी भूमि तुझे लौटा दूँगा और तू सदा मेरी मेज पर भोजन किया करेगा।”

13 मपीबोशेत यरूशलेम में रहने लगा, क्योंकि वह सदा राजा की मेज पर भोजन करता था। उसके दोनों पैर लँगड़े थे।

परमेश्वर हमारे जीवन में जो कार्य कर रहा है, उसे स्थिर करने और उसमें विस्तार करने की एक मुख्य कुंजी है कि हम अपने आसपास के लोगों पर, यहाँ तक कि उन पर भी जो हमारे साथ गलत कर चुके हों, दया करें। जो कुछ परमेश्वर ने हमारे जीवन में उंडेला है, उसे बाँटें, आगे पहुँचाएँ, दे दें और उदारता से वितरित करें। जब आप दयालुता बोते हैं, तो दयालुता और उदारता के प्रतिफल काटते हैं।



जीवन में विस्तार के लिए स्वयं को कैसे स्थिर करें

राजा दाऊद — एक जीवनीपरक रूपरेखा — उपदेश श्रृंखला

उपदेश के नोट्स, उपदेश की रूपरेखा और छोटे समूह के अध्ययन के लिए मार्गदर्शिका

इस अवधि में सम्भवतः लिखे गए भजन:

भजन संहिता 9: परमेश्वर के धर्ममय न्याय और विजय के लिए धन्यवाद।

भजन संहिता 10: अत्याचार के विषय में प्रार्थना।

भजन संहिता 12: भ्रष्टाचार और अविश्वासयोग्यता के विषय में प्रार्थना।

भजन संहिता 14: मानवजाति का भ्रष्टाचार।

भजन संहिता 55: विश्वासघात से उत्पन्न पीड़ा; दाऊद के विश्वसनीय साथियों के साथ बाद में हुए अनुभव को देखते हुए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है।

भजन संहिता 58: भ्रष्ट शासकों और न्यायियों के विरुद्ध पुकार।

भजन संहिता 75: परमेश्वर का धर्ममय न्याय और उच्च पद पर उठाना।

भजन संहिता 101: राजा के रूप में दाऊद की जिम्मेदारियों से विशेष रूप से संबंधित।

भजन संहिता 103: परमेश्वर की दया के विषय में दाऊद की महान घोषणा।

भजन संहिता 144: स्पष्ट रूप से दाऊद से संबंधित और राजकीय तथा सैन्य विषयों से युक्त।

भजन संहिता 145: राजा और उसके राज्य की स्तुति में दाऊद का महान भजन।

इस समय के दौरान लिखे गए होने की सम्भावना है, पर निश्चित नहीं:

भजन संहिता 22: गहरा विलाप और परमेश्वर पर भरोसा। इसका अंतिम मसीहाई महत्व स्पष्ट है, पर दाऊद के जीवन में इसका सटीक ऐतिहासिक संदर्भ अज्ञात है।

भजन संहिता 53: भजन संहिता 14 के समानांतर; इसका समय निश्चित नहीं है।

भजन संहिता 108: भजन संहिता 57 और 60 के कुछ अंशों से बना है; इसलिए इसे स्वतंत्र रूप से किसी निश्चित समय का ठहराना कठिन है।